गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 234
दि. 25.12.2025,
गुरुवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

EDITOR : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH Regd. Office: TF-01, Nanakram Super Market,Ramnagar,Sabarmati, Ahmedabad-380 005. Gujarat, India.

Phone : 90163 33307 (M) 93283 33307, 98253 33307 • Email : garvigujarat2007@gmail.com • Email : garvigujarat2007@yahoo.com • Website : www.garvigujarat.co.in

गृह लक्ष्मी को लेकर सरकार बनाम विपक्ष आमने-सामने

(जीएनएस)। बंगलूरू। कर्नाटक की राजनीति में एक बार फिर गरमी तेज हो गई है और इस बार केंद्र में है राज्य सरकार की बहुचर्चित गृह लक्ष्मी योजना। आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों की महिला मुखिया को हर महीने दो हजार रुपये देने की इस योजना को लेकर भाजपा ने सिद्धारमैया सरकार पर गंभीर आरोप लगाए हैं। विधानसभा में विपक्ष का नेता आर अशोक ने दावा किया है कि फरवरी और मार्च महीने की करीब पांच हजार करोड़ रुपये की राशि लाभार्थियों तक नहीं पहुंचाई गई और सरकार ने इस सच्चाई को जानबूझकर दबाने की कोशिश की। इस आरोप के साथ ही भाजपा ने राज्यभर में आंदोलन छेड़ने का ऐलान कर दिया है, जिससे आने वाले दिनों में कर्नाटक की सियासत और ज्यादा उथल-पुथल भरी होने के संकेत मिल रहे हैं।

गृह लक्ष्मी योजना को कांग्रेस सरकार ने सत्ता में आने के बाद अपनी पांच गारंटी योजनाओं में सबसे अहम बताया था। सरकार का दावा रहा है कि इस योजना के जरिए महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जा रहा है और घरेलू खर्चों में उन्हें राहत मिल रही है। 1.26 करोड़ से ज्यादा परिवार इस योजना से जुड़े बताए जाते हैं। लेकिन अब भाजपा का आरोप है कि सरकार के दावों और जमीनी हकीकत के बीच बड़ा अंतर है। आर अशोक का कहना है कि जिन महीनों में महिलाओं को यह सहायता राशि मिलनी थी, उन महीनों का भुगतान ही नहीं किया गया और सरकार ने इस मुद्दे पर चुप्पी साधे रखी।

भाजपा नेता ने सवाल उठाया कि अगर सरकार के पास पैसा नहीं था तो उसने यह बात खुलकर क्यों नहीं कही। उन्होंने कहा कि या तो सरकार जनता को धोखा दे रही है या फिर राज्य की आर्थिक स्थिति इतनी कमजोर हो चुकी है कि वह अपनी ही गारंटी योजनाओं का बोझ नहीं उठा पा रही। अशोक ने यह भी आरोप लगाया कि वित्त विभाग ने इस पूरे मामले को दबाने की कोशिश की और विधानसभा सत्र के दौरान जानबूझकर कोई स्पष्ट जवाब नहीं दिया गया। उनका कहना है कि तीन दिन तक भाजपा ने महिला एवं बाल विकास मंत्री लक्ष्मी हेब्बालकर के जवाब का इंतजार किया, लेकिन मंत्री की ओर से कोई ठोस स्पष्टीकरण नहीं आया। भाजपा का दावा है कि उसे 8 से 10 जिलों से जानकारी मिली है, जहां लाभार्थियों को तय समय पर राशि नहीं मिली। जब पार्टी ने अन्य जिलों से भी जानकारी जुटाने की कोशिश की तो कथित तौर पर अधिकारियों को विवरण साझा न करने का दबाव बनाया गया। आर अशोक ने इसे बड़ा घोटाला करार देते हुए कहा कि यह केवल प्रशासनिक चूक नहीं बल्कि सुनियोजित गबन का मामला है। उनके अनुसार, जब करोड़ों रुपये का सवाल हो और सरकार पारदर्शिता न दिखाए, तो संदेह और गहरा हो जाता है।

इस मुद्दे पर भाजपा ने साफ कर दिया है कि वह पीछे हटने वाली नहीं है। पार्टी ने राज्यभर में विरोध प्रदर्शन करने का ऐलान किया है और कहा है कि जब तक महिलाओं को उनका बकाया पैसा नहीं मिल जाता, आंदोलन जारी रहेगा। भाजपा का कहना है कि जिन महिलाओं को इस योजना पर भरोसा दिलाया गया था, उनके साथ अन्याय हुआ है और यह सीधे तौर पर सरकार की विश्वसनीयता पर सवाल खड़ा करता है। पार्टी इसे महिला सम्मान और आर्थिक न्याय से जोड़कर जनता के बीच ले जाने की तैयारी में है। इस सियासी टकराव के बीच आर अशोक ने सरकार द्वारा हाल ही में पारित किए गए हेट स्पीच और हेट क्राइम बिल पर भी तीखा हमला बोला है। उन्होंने आरोप लगाया कि इस कानून को बिना पर्याप्त चर्चा के जल्दबाजी में दोनों सदनों से पास कराया गया। अशोक के अनुसार, यह बिल अभिव्यक्ति की आजादी पर सीधा हमला है और इसका इस्तेमाल सरकार आलोचनाओं को दबाने के लिए कर सकती है। उन्होंने कहा कि अगर यह कानून लागू हुआ तो लोग घोटालों पर सवाल नहीं उठा पाएंगे, कार्टून और व्यंग्य के जरिए अपनी बात नहीं कह पाएंगे और बढ़ते अपराध व भ्रष्टाचार पर खुलकर बोलने से डरेंगे।

भाजपा नेता ने राज्यपाल से अपील करने की बात भी कही कि वे इस बिल को मंजूरी न दें। उनका कहना है कि लोकतंत्र में सरकार की आलोचना करना नागरिकों का अधिकार है और किसी भी कानून के जरिए इस अधिकार को सीमित करना खतरनाक मिसाल बन सकता है। भाजपा इसे केवल कानूनी मसला नहीं बल्कि लोकतांत्रिक मूल्यों से जुड़ा मुद्दा बता रही है।

उधर, कांग्रेस सरकार पर यह आरोप भी लगाया जा रहा है कि उत्तर कर्नाटक की अनदेखी की जा रही है। बेलगावी में हुए शीतकालीन सत्र से इस क्षेत्र के लोगों को काफी उम्मीदें थीं, लेकिन भाजपा का दावा है कि वहां के लिए कोई बड़ा आर्थिक पैकेज घोषित नहीं किया गया। उल्टे फंड में कटौती कर दी गई, जिससे क्षेत्रीय असंतोष और बढ़ गया है। भाजपा इसे सरकार की प्राथमिकताओं पर सवाल के तौर पर पेश कर रही है।

कुल मिलाकर, गृह लक्ष्मी योजना को लेकर उठा विवाद अब केवल एक योजना तक सीमित नहीं रहा है। यह मुद्दा सरकार की आर्थिक स्थिति, प्रशासनिक पारदर्शिता, लोकतांत्रिक अधिकारों और क्षेत्रीय असमानता जैसे बड़े सवालों से जुड़ता जा रहा है। भाजपा इसे सरकार की नाकामी और कथित भ्रष्टाचार का प्रतीक बता रही है, जबकि कांग्रेस सरकार पर दबाव लगातार बढ़ता दिख रहा है। आने वाले दिनों में आंदोलन और सियासी बयानबाजी के साथ यह मुद्दा और तूल पकड़ सकता है, जिसका असर न सिर्फ कर्नाटक की राजनीति पर पड़ेगा बल्कि सरकार की गारंटी योजनाओं की साख पर भी सीधा प्रभाव डालेगा।

सुशासन सप्ताह में प्रशासन की सक्रियता, एक हफ्ते में 17 लाख से अधिक जनशिकायतों का समाधान

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने सुशासन सप्ताह के दौरान देशभर में जनसुनवाई और सेवा वितरण के क्षेत्र में बड़ी उपलब्धि का दावा किया है। कार्मिक, लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय ने बुधवार को बताया कि 19 से 25 दिसंबर के बीच मनाए गए सुशासन सप्ताह के दौरान 17 लाख से अधिक जनशिकायतों का निपटारा किया गया। सरकार का कहना है कि इस अभियान का उद्देश्य प्रशासनिक व्यवस्था को अधिक पारदर्शी, संवेदनशील और जवाबदेह बनाना है, ताकि आम नागरिकों की समस्याओं का समाधान समयबद्ध और प्रभावी ढंग से किया जा सके। मंत्रालय के अनुसार, सुशासन सप्ताह इस वर्ष देश के सभी 36 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में व्यापक स्तर पर आयोजित किया गया। यह अभियान केवल राजधानी या राज्य मुख्यालयों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसे जिला और तहसील स्तर तक ले जाया गया, जिससे ग्रामीण और दूरदराज के इलाकों में रहने वाले लोगों को भी सीधे तौर पर लाभ मिल सके। प्रशासन ने इस दौरान नागरिकों से जुड़ी शिकायतों और सेवा संबंधी आवेदनों को प्राथमिकता के आधार पर निपटाने पर जोर दिया। सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, इस एक सप्ताह के दौरान कुल 1.5 करोड़ से अधिक सेवा संबंधी आवेदनों का समाधान किया गया। इनमें राजस्व, सामाजिक कल्याण, पेंशन, राशन, स्वास्थ्य, शिक्षा और अन्य नागरिक सेवाओं से जुड़े मामले शामिल थे। मंत्रालय का कहना है कि यह आंकड़ा दिखाता है कि यदि प्रशासनिक मशीनरी को केंद्रित लक्ष्य और समयसीमा के साथ सक्रिय किया जाए, तो कम समय में भी बड़े पैमाने पर समस्याओं का समाधान संभव है। सुशासन सप्ताह के तहत देशभर में 32 हजार से अधिक शिविरों, कार्यशालाओं और जनसुनवाई कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन शिविरों के माध्यम से नागरिकों को अपनी शिकायतें सीधे अधिकारियों के सामने रखने का अवसर मिला। कई जगहों पर मौके पर ही समस्याओं का समाधान किया गया, जबकि जटिल मामलों के लिए समयबद्ध कार्ययोजना तैयार की गई। मंत्रालय के अनुसार, इन प्रयासों के चलते 17 लाख से अधिक जनशिकायतों का समाधान संभव हो सका।

सेंगर को राहत पर उठा न्याय और संवेदना का सवाल, राहुल गांधी का तीखा विरोध

नई दिल्ली। उन्नाव दुष्कर्म मामले में उम्रकैद की सजा काट रहे दोषी कुलदीप सिंह सेंगर को दिल्ली हाईकोर्ट से मिली जमानत ने देश की राजनीति और समाज दोनों में एक बार फिर गहरी बहस छेड़ दी है। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने इस फैसले का कड़ा विरोध जताते हुए इसे न केवल निराशाजनक बल्कि शर्मनाक करार दिया है। राहुल गांधी ने कहा कि ऐसे फैसले यह संकेत देते हैं कि देश केवल आर्थिक संकट से ही नहीं गुजर रहा, बल्कि संवेदनहीनता की ओर बढ़ते हुए एक तरह से सामाजिक और नैतिक संकट में भी फंसता जा रहा है।

राहुल गांधी ने सोशल मीडिया के जरिए अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए दुष्कर्म पीड़िता के पक्ष में आवाज उठाई। उन्होंने उस पोस्ट को दोबारा साझा किया, जिसमें दावा किया गया था कि विरोध प्रदर्शन के दौरान पीड़िता को पुलिस ने हटाया। इस पर तीखी टिप्पणी करते हुए राहुल ने सवाल उठाया कि क्या किसी सामूहिक दुष्कर्म पीड़िता के साथ ऐसा व्यवहार उचित है। उन्होंने कहा कि क्या उसकी गलती सिर्फ इतनी है कि उसने न्याय के लिए आवाज उठाने का साहस किया। राहुल ने साफ शब्दों में कहा कि जिस अपराधी ने जघन्य अपराध किया, उसे जमानत मिलना बेहद निराशाजनक और शर्मनाक है, खासकर उस स्थिति में जब पीड़िता लगातार प्रताड़ना झेल रही हो और डर के साये में जीने को मजबूर हो।

कांग्रेस नेता ने इस पूरे घटनाक्रम को न्याय व्यवस्था और समाज के लिए एक गंभीर चेतावनी बताया। उन्होंने कहा कि एक तरफ दुष्कर्म के दोषियों को राहत दी जा रही है और दूसरी तरफ पीड़िताओं के साथ अपराधियों जैसा व्यवहार किया जा रहा है। राहुल गांधी ने सवाल उठाया कि यह कैसा न्याय है, जहां पीड़िता को सम्मान और सुरक्षा की जगह डर, बेबसी और अन्याय का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि लोकतंत्र में असहमति और विरोध की आवाज उठाना नागरिकों का अधिकार है और उस आवाज को दबाना अपने आप में अपराध है। राहुल गांधी का कहना है कि इस तरह के फैसले समाज को गलत संदेश देते हैं और महिलाओं के खिलाफ अपराधों को लेकर पहले से मौजूद डर और अविश्वास को और गहरा करते हैं। उन्होंने दावा किया कि देश आज केवल एक मृत अर्थव्यवस्था की ओर नहीं बढ़ रहा, बल्कि ऐसी घटनाओं और फैसलों के कारण एक मृत समाज की तस्वीर भी उभर रही है, जहां संवेदना और न्याय कमजोर पड़ते जा रहे हैं। उनके अनुसार, जब एक पीड़िता को बार-बार प्रताड़ित किया जाए और अपराधी को राहत मिले, तो यह केवल एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि पूरी व्यवस्था का नैतिक संकट बन जाता है।

कांग्रेस नेता ने दोहराया कि दुष्कर्म पीड़िता को सम्मान, सुरक्षा और त्वरित न्याय मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि किसी भी सभ्य समाज की पहचान इस बात से होती है कि वह अपने सबसे कमजोर और पीड़ित नागरिकों के साथ कैसा व्यवहार करता है।

हर घर स्वदेशी
घर-घर स्वदेशी

सत्यमेव जयते
गुजरात सरकार
ऊर्जा एवं पेट्रोकेमिकल्स विभाग

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

श्री भूपेन्द्रभाई पटेल
माननीय मुख्यमंत्री, गुजरात

गुजरात की गौरवपूर्ण उपलब्धि

'PM सूर्य घर: मुफ्त बिजली योजना' के तहत

५ लाख से अधिक घर अब... सौर ऊर्जा से रोशन

२५% राष्ट्रीय योगदान के साथ गुजरात है प्रथम

पीएम सूर्य घर: मुफ्त बिजली योजना के माध्यम से गुजरात ने ऊर्जा आत्मनिर्भरता की दिशा में एक नया मानक स्थापित किया है। अब तक, विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत गुजरात में **११ लाख** से अधिक रूफटॉप सोलार इंस्टॉलेशन्स किए जा चुके हैं, जिनकी कुल सौर ऊर्जा क्षमता **६,३१५ मेगावाट** है।

योजना का उद्देश्य

- पीएम सूर्य घर: मुफ्त बिजली योजना के तहत प्रति माह **३०० यूनिट** तक निःशुल्क बिजली
- देशभर में **१ करोड़** परिवारों तक सौर ऊर्जा का लाभ पहुँचाने की राष्ट्रीय प्रतिबद्धता

सब्सिडी

आवासीय उपयोग हेतु
₹ ७८,०००*
३ किलोवाट या इससे अधिक

ग्रुप हाउसिंग सोसायटीज़ के लिए
₹ ४८,०००*
प्रति किलोवाट

GUVNL

क्या आप रूफटॉप सोलार स्थापित कर अपने घर को निःशुल्क बिजली से सशक्त बनाना चाहते हैं? आज ही **pmsuryaghar.gov.in** पर जाएँ और ऊर्जा आत्मनिर्भरता की ओर पहला कदम बढ़ाएँ।

वेबसाइट के लिए स्कैन करें

सुशासन दिवस – २५ दिसंबर २०२५

प्रगतिशील नीतियों का अनावरण
- गुजरात एकीकृत नवीकरणीय ऊर्जा नीति २०२५
- गुजरात पंप स्टोरेज परियोजना नीति २०२५
- गुजरात ग्रीन हाइड्रोजन नीति २०२५

ऊर्जा क्षेत्र में कैपेसिटी बिल्डिंग हेतु GETRI द्वारा प्रमुख समझौते (MoUs):
- **IIMA:** प्रबंधन और व्यावसायिक इकोसिस्टम को बेहतर बनाने हेतु
- **IITGN:** ऊर्जा उत्पादन, भंडारण एवं वितरण अवसंरचना के उन्नयन हेतु
- **NFSU:** साइबर सुरक्षा तथा विद्युत क्षेत्र में कौशल एवं दक्षता विकास के लिए
- **GERMI एवं PDEU:** ऊर्जा भंडारण और ईवी चार्जिंग अवसंरचना में उत्कृष्टता के लिए
- **EDII एवं प्रशिक्षण निदेशालय:** ग्रीन एम्प्लॉयमेंट हेतु

" गुजरात ने नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में अनेक नई ऊँचाइयाँ हासिल की हैं। हमारा लक्ष्य केवल बिजली उत्पादन तक सीमित रहना नहीं है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को प्रदूषण-मुक्त और ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भर भविष्य प्रदान करने का भी है। "– **श्री हर्ष संघवी,** माननीय उपमुख्यमंत्री, गुजरात

संपादकीय

साइबर ठगी का जाल

शायद ही कोई दिन ऐसा जाता होगा जब कोई बुजुर्ग या आम लोग साइबर ठगी के शिकार न हुए हों। पिछले दिनों महाराष्ट्र में एक सेवानिवृत्त जज भी डिजिटल अरेस्ट स्कैम के शिकार हो गए। पिछले सप्ताह ऐसा ही एक अन्य दुखद मामला पुणे से सामने आया जब साइबरों ठगों ने एक 82 वर्षीय सेवानिवृत्त अधिकारी को डिजिटल हाउस अरेस्ट स्कैम में फंसाकर 1.19 करोड़ लूट लिए। कई दिन के मानसिक उत्पीड़न व आर्थिक क्षति से टूट गए वृद्ध की आखिर सदमे से मौत हो गई। यह विचारणीय पहलू है कि कैसे पढ़े-लिखे लोग साइबर ठगों की साजिश की गिरफ्त में आ जाते हैं। वैसे आम आदमी को साइबर ठगों व फर्जी फोन कॉल्स से बचाने के लिये पुख्ता व्यवस्था होना बेहद जरूरी है। आम लोगों की सुविधा व सुरक्षा के लिये सरकार के प्रयासों के बाद अब दूरसंचार विभाग ने मार्च 2026 में ऐसी व्यवस्था लागू करने के तैयारी की, जिसमें बिना ट्रू-कॉलर के खुद मोबाइल अवांछित फोन के प्रति सजग करेगा। नियामक संस्था ट्राई ने इस प्रस्ताव पर सहमति जतायी है। यह विडंबना ही कि जैसे-जैसे नई तकनीक आम आदमी के जीवन में सुविधा लाती है, वहीं असामाजिक तत्व उसे लूट-खसोट का हथियार बनाने में आगे निकल जाते हैं। देश में इंटरनेट सेवाओं के विस्तार और मोबाइल फोन की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि के साथ ही साइबर अपराधों में खासी तेजी आई है। जरा सी चूक होने पर लाखों लोग, साइबर धोखाधड़ी में अपने जीवनभर की पूंजी कुछ ही क्षणों में गवां देते हैं। अपराधियों का संजाल इतना विस्तृत व रहस्यमय है कि प्रवर्तन एजेंसियां जब तक उन तक पहुंचती हैं, पैसा विदेशों में ट्रांसफर हो जाता है। इस संकट का एक पहलू अनजान नंबरों से आने वाली फोन कॉल्स होती हैं, जिसके जरिये अपराधी लोगों को भ्रमित कर जीवन की जमा पूंजी लूट लेते हैं। दरअसल, संचार क्रांति के चलते तमाम सेवाएं ऑनलाइन उपलब्ध हुई हैं, लेकिन इस सुविधा के साथ पुरानी पीढ़ी साम्य नहीं बैठा पाती है।

अब इसी चुनौती को दूर करने के लिये दूरसंचार विभाग आम उपभोक्ता को ऐसी सुविधा देने जा रहा है, जिसमें फोन करने वाले को पहचाना जा सकेगा। फोन पर कॉल करने वाले व्यक्ति का नाम लिखा नजर आएगा। फिर व्यक्ति अपनी सुविधा अनुसार फोन कॉल्स लेना तय कर सकता है। दूरसंचार नियामक ट्राई की मंजूरी के बाद इस दिशा में तेजी से काम हो रहा है। हालांकि, फोन करने वाले व्यक्ति की जानकारी जुटाने के कई ऐप अभी भी मौजूद हैं, लेकिन उनका उपयोग कुछ ही लोग कर पाते हैं। वैसे ऐसा निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि ऐप द्वारा दी जाने वाली सूचना सटीक है। ऐसे में यदि दूरसंचार विभाग की कोशिश सिरे चढ़ती है तो इससे करोड़ों उपभोक्ताओं को सुरक्षा कवच मिल पाएगा। पहले इस सुविधा का लेना मांग पर आधारित था, लेकिन बाद में तय किया गया कि यह सुविधा प्रत्येक मोबाइल उपयोगकर्ता को उपलब्ध करायी जाएगी। विश्वास किया जा रहा है कि अगले साल मार्च तक पूरे देश में यह सुविधा उपलब्ध हो जाएगी। जानकारों का मानना है कि इस सुविधा से किसी सीमा तक मोबाइल के जरिये धोखाधड़ी करने वाले अपराधियों पर नकेल कसी जा सकेगी। मोबाइल उपयोगकर्ता की सजगता इसमें मददगार हो सकेगी। स्क्रीन पर अनजान नंबर व नाम देखने के बाद मोबाइलधारक फोन कॉल्स को उठाने से बच सकता है। वैसे इसके साथ ही देश में डिजिटल साक्षरता की दिशा में व्यापक पहल करने की जरूरत है। विभिन्न सूचना माध्यमों के जरिये लोगों को सजग-सतर्क किए जाने की आवश्यकता है। शहरों से लेकर ग्राम पंचायतों तक जनजागरण अभियान चलाकर लोगों को बताया जाना चाहिए कि बैंक, सीबीआई, कोर्ट या अन्य प्रवर्तन एजेंसियां कभी फोन करके उनके बैंक खाते या अन्य मामलों की जानकारी नहीं मांगती हैं। ऐसे फर्जी कॉल्स की प्रमाणिकता की पुष्टि करने के लिये हेल्पलाइन सुविधाओं में विस्तार करने की भी जरूरत है। देश में मोबाइल नेटवर्क उपलब्ध कराने वाली कंपनियों को भी बाध्य किया जाना चाहिए कि वे उपयोगकर्ताओं को शिक्षित करके संदिग्ध फोन नंबरों के प्रति सचेत करें।

मनुष्यता की मौत है संवेदना धारा का सूखना

> “ मनुष्यता की इस मौत को हम तमाशबीन बनकर नहीं देख सकते। जब कोई पूछता है कि ‘ऐ भाई, कोई है...’ तो हमारे भीतर कहीं यह आवाज उठनी ही चाहिए कि, हां मैं हूं। आज अपने भीतर के इस मैं को जगाने की आवश्यकता है। इसे नहीं जगायेंगे तो मर जाएंगे हम।

‘ऐ भाई, कोई है...’ अंधेरी रात में एक सुनसान सड़क पर यह चार शब्द कुछ ऐसे गूंज रहे थे कि भीतर तक आदमी हिल जाये। दशकों पहले आयी थी यह फिल्म। फिल्म के उस दृश्य में यह गुहार लगाने वाला कलाकार था दिलीप कुमार। सड़क पर आने वाली हर कार को रोकने की कोशिश में लगा था—‘ऐ भाई, गाड़ी रोको, मेरी बीवी को अस्पताल पहुंचा दो, मर जायेगी वह’। पर कोई कार नहीं रुकी, आस-पास के किसी मकान की कोई खिड़की नहीं खुली। फिल्म का नाम शायद ‘मशाल’ था। फिल्म में और क्या था, कुछ भी याद नहीं मुझे, पर ‘ऐ भाई’ वाले दिलीप कुमार की वह गुहार भूले नहीं भूलती।

ऐसा भी नहीं है कि मैं इस दृश्य की जुगाली करता रहा हूं। पर जैसे दिमाग के किसी कोने में बस गया है यह दृश्य। यह दृश्य व्यक्ति की बेबसी और हृदयहीनता दोनों का उदाहरण लगता है मुझे। कभी कुछ देखकर और कभी कुछ सुनकर अक्सर याद आ जाता है मुझे। उस दिन टीवी पर समाचार देखते सुनते हुए अचानक उछल कर मेरे सामने आ गया था यह दृश्य। नहीं, यह फिल्म का दृश्य नहीं था। बेंगलुरु में घटी एक घटना का समाचार था। स्कूटी पर जाते एक पुरुष और महिला के साथ घटी थी वह घटना। स्कूटी फिसलने से दोनों सड़क पर जा गिरे। समाचार में बताया जा रहा था कि उस व्यक्ति को दिल का दौरा पड़ा था और वह अपनी पत्नी के साथ अस्पताल जा रहा था। बड़े अस्पताल। छोटे अस्पताल वालों ने भर्ती नहीं किया था। और एंबुलेंस की व्यवस्था भी नहीं की थी। स्कूटी फिसलने से गिरे तो दोनों थे पर महिला जल्दी उठ गयी। अब वह सड़क पर आती जाती कारों को रोकने के लिए गुहार लगा रही थी। बिल्कुल ‘मशाल’ वाले दिलीप कुमार के दृश्य की तरह, और कोई गाड़ी नहीं रुकी। समाचार वाचक बता रहा था, सीसीटीवी कैमरों से पता चला कि कुल 17 गाड़ियां उस दौरान वहां से गुजरी थीं। और एक भी नहीं

रुकी! स्कूटी चालक की मृत्यु हो गयी। वह महिला गुहार लगाती रह गयी...

तभी मेरी आंखों के सामने फिल्म ‘मशाल’ वाला वह दृश्य पसर गया। जैसे दिलीप कुमार हर आती-जाती कार को रोकने की कोशिश में ‘ऐ भाई, कोई है’ की आवाज़ लगा रहा था, ठीक वैसे ही वह महिला अपने पति को अस्पताल पहुंचाने की गुहार लगा रही थी! 17 वाहन गुजर गये वहां से, पर एक भी नहीं रुका। महिला चीख-चीख कर अपने पति के प्राणों की भीख मांग रही थी, पर किसी का दिल नहीं पसीजा... उस महिला के पति ने दम तोड़ दिया... कोई कार वाला रुक जाता, कोई उस महिला की मदद कर देता... शायद उसका पति बच जाता...

‘मशाल’ वाला वह दृश्य व्यक्ति की बेबसी और निर्ममता दोनों का उदाहरण था, और बेंगलुरु की सड़क का वह दृश्य भी वह कहानी कह रहा था। बेबसी वाली बात तो फिर भी समझ आती है, पर व्यक्ति के इतना निर्मम होने की बात को समझना मुश्किल है। आखिर कैसे कोई इतना निर्मम हो सकता है?

नहीं, ऐसा नहीं है। ऐसा नहीं है कि व्यक्ति के भीतर की मनुष्यता और संवेदनशीलता मिट गयी है। अनेक उदाहरण मिल जायेंगे आदमी की आदमीयत के। पर इस हकीकत से भी आंख नहीं चुरायी जा सकती कि कहीं न कहीं हृदय-हीनता हम पर हावी होती जा रही है। लेकिन क्यों? पचास साल पहले उस फिल्मकार ने हृदय-हीनता का एक उदाहरण दिखाया था, उस रात बेंगलुरु में घटी घटना भी ऐसा ही एक उदाहरण प्रस्तुत करती है। आधी सदी का फासला है इन दोनों घटनाओं में, पर दोनों सवाल एक-सा उठाती हैं– हमारी संवेदनहीनता का सवाल! करुणा, दया, ममता, मैत्री, भाईचारा जैसे शब्द आखिर क्यों अपना महत्व खोते जा रहे हैं? क्यों मनुष्य आत्मकेंद्रित और स्वार्थी बनता जा रहा है? कहीं कुछ है जो हमारे भीतर की संवेदनशीलता, भीतर की मनुष्यता को कुंद बनाता जा रहा है–और हम जानकर भी इससे अनजान बने रहना चाहते हैं! बात किसी मरीज को अस्पताल पहुंचाने की नहीं है, बात हमारे भीतर के मनुष्यता के मरते जाने की है। कटु लग सकती है यह बात, पर है सच। जब हम मनुष्यता के मरते जाने की बात करते हैं तो इसका सीधा-सा मतलब है आदमीयत झटके से समाप्त नहीं हो रही, धीरे-धीरे जैसे कोई मीठी सी धारा सूखती जा रही है।

लेकिन सड़क पर किसी को दम तोड़ते हुए देखने को अनदेखा करना अपने भीतर की मनुष्यता को मरते हुए देखना है। हैरानी की बात यह है कि अब यह देखना हमें न हैरान करता है, न परेशान। ऐसा बहुत कुछ देख चुके हैं हम, अब तो जैसे आदत-सी हो चुकी है यह देखने की। लगभग अस्सी साल हो चुके हैं दूसरे विश्वयुद्ध को समाप्त हुए। हिरोशिमा और नागासाकी पर एटम बम बरसाने के बाद भी मनुष्य यह नहीं समझ पाया कि वह जो कुछ कर रहा है, वह मनुष्यता का नकार है। अब तक जापान इस नृशंसता के परिणाम भुगत रहा है। पर ऐसी किसी भी त्रासदी से कुछ सीखना नहीं चाहते हम। पिछले अस्सी सालों में, यानी एटम बम से युद्ध समाप्त करने की घोषणा से अब तक शायद ही कोई दिन ऐसा गया होगा जब दुनिया में कहीं न कहीं आदमी का खून नहीं बहा होगा। बरसों से चल रहे हैं युद्ध। लाखों की बलि देकर भी हम यह सीखने को तैयार नहीं कि युद्ध का मतलब व्यक्ति का नहीं, मनुष्यता का मरना भी होता है। यह मनुष्यता फलस्तीन और यूक्रेन में भी मर रही है और बेंगलुरु की किसी सड़क पर जब कोई घायल मदद के अभाव में दम तोड़ता है तब भी इसी मनुष्यता की मौत होती है। और हम जैसे शापित हैं मनुष्यता को मरते हुए देखने को, सो देख रहे हैं!

पर यह कथित असहायता हमारी नियति नहीं है। जब कोई दिलीप कुमार ‘ऐ भाई, कोई है, मेरी बीवी को अस्पताल पहुंचा दो’ की गुहार लगाता है या फिर कोई महिला सड़क पर दम तोड़ते अपने पति को अस्पताल तक पहुंचाने की भीख मांगती है तो यह हमारे भीतर की करुणा को जगाने की चुनौती होती है। यही चुनौती गाजा और यूक्रेन में भी हमारे सामने है। ऐसी हर घटना हमें यह बताती है कि हमारे भीतर की मनुष्यता की धारा सूख रही है। सूख नहीं रही, मर रही है। मनुष्यता की इस मौत को हम तमाशबीन बनकर नहीं देख सकते।

जब कोई पूछता है कि ‘ऐ भाई, कोई है...’ तो हमारे भीतर कहीं यह आवाज़ उठनी ही चाहिए कि, हां मैं हूं। आज अपने भीतर के इस मैं को जगाने की आवश्यकता है। इसे नहीं जगायेंगे तो मर जाएंगे हम।

तीस-पैंतीस साल पहले की बात है। सूडान में भुखमरी की स्थिति देखने-दिखाने के लिए एक फोटोग्राफर ने एक ऐसा चित्र खींचा जिसमें भूख का मारा एक बच्चा रेंगता दिख रहा है और एक गिद्ध इस बात का जैसे इंतजार कर रहा है कि कब वह भूखा बच्चा मरे...। यह चित्र तब पुरस्कृत हुआ था। और हकीकत यह भी है कि वह फोटोग्राफर कुछ अर्सा बाद आत्महत्या करके मर गया–वह यह बात सहन नहीं कर पा रहा था कि उस दिन गिद्ध और बच्चे वाला वह चित्र खींचते समय उसने बच्चे को बचाने की कोशिश क्यों नहीं की! आप चाहें तो इसे प्रायश्चित कह सकते हैं, लेकिन आवश्यकता इस बात को समझने की है कि जिंदगी की दौड़ में आगे रहने या बने रहने के लिए हम अपने भीतर की करुणा और संवेदनशीलता को लगातार मारते जा रहे हैं। प्रायश्चित या पश्चाताप पर्याप्त नहीं है।

मनुष्यता का तकाज़ा है आदमी से आदमी के रिश्ते को पहचानना- समझना। और इसीलिए यह समझना ज़रूरी हो गया है कि आदमी इतना निर्मम क्यों होता जा रहा है। समझना यह भी होगा कि कैसे उबर सकते हैं हम निर्मम होते जाने की इस स्थिति से। उस रात जब बेंगलुरु की उस सुनसान सड़क पर एक महिला की चीख-पुकार को अनसुना किया जा रहा था, तो वस्तुतः अनसुना करने वाले आदमी के भीतर की संवेदनशीलता के कुंठित होते जाने की गवाही दे रहे थे। होते जाने वाली यह प्रक्रिया आदमीयत के लिए एक चुनौती है, यदि मनुष्यता को जीना है तो इस चुनौती को स्वीकारना ही होगा और स्वीकार का मतलब ‘कोई है’ वाली पुकार का उत्तर देना ही हो सकता है।

प्रेरणा

आंतरिक सुख की खोज

प्राचीन यूनान की धूल भरी गलियों में एक ऐसा व्यक्ति रहता था, जिसके पास न महल था, न धन-दौलत, न ही समाज की स्वीकृति का कवच। उसका नाम था डायोजनीज। वह अक्सर मिट्टी के एक बड़े घड़े में रहता, फटे पुराने वस्त्र पहनता और लोगों की भीड़ से अलग अपने ही विचारों की दुनिया में मग्न रहता। नगर के लोग उसे सनकी कहते थे, कोई पागल समझता था, तो कोई दार्शनिक। लेकिन जो थोड़ी देर उसके पास बैठता, वह यह समझ जाता कि इस व्यक्ति के शब्दों में जितनी सरलता है, उतनी ही गहराई भी है। डायोजनीज के लिए जीवन दिखावे का मंच नहीं था, बल्कि सत्य और सादगी का अभ्यास था। वह मानता था कि मनुष्य जितना कम चाहता है, उतना ही अधिक स्वतंत्र हो जाता है।

एक दिन नगर में उत्सव का माहौल था। अमीरों के घरों में भोज चल रहे थे, सड़कों पर रेशमी कपड़ों की सरसराहट थी और आभूषणों की चमक आंखों को चकाचौंध कर रही थी। उसी भीड़ से एक धनी युवक निकलकर डायोजनीज के पास आया। उसके वस्त्र महंगे थे, इत्र की खुशबू उसके आसपास फैली थी, लेकिन चेहरे पर संतोष का नामोनिशान नहीं था। उसकी आंखों में एक अजीब-सी बेचैनी थी, जैसे भीतर कुछ लगातार कचोट रहा हो। उसने डायोजनीज को प्रणाम किया और थोड़ी देर चुपचाप खड़ा रहा, मानो शब्द ढूंढ़ रहा हो। फिर उसने भारी आवाज में कहा कि उसके पास धन है, सम्मान है, लोग उसकी प्रशंसा करते हैं, फिर भी मन शांत नहीं रहता। हर उपलब्धि के बाद भी लगता है कि कुछ अधूरा है, कुछ और चाहिए। सुख जैसे हाथ से फिसलता चला जाता है।

डायोजनीज ने उसकी ओर देखा, मुस्कुराए और बिना कुछ कहे उसे अपने साथ थोड़ी दूर चलने का इशारा किया। दोनों एक खुले मैदान में पहुंचे, जहां धूप तेज थी। वहां एक कुत्ता बैठा था। वह कुछ देर धूप में बैठा, फिर उठकर पास की छांव में जाकर लेट गया। डायोजनीज ने युवक से पूछा कि वह कुत्ता क्या कर रहा है। युवक ने सहजता से उत्तर दिया कि वह आराम ढूंढ़ रहा है, जहां उसे अच्छा लगता है वहां चला जा रहा है। डायोजनीज ने फिर पूछा कि तुम क्या कर रहे हो। युवक इस प्रश्न पर चुप हो गया। उसके पास उत्तर नहीं था, क्योंकि वह जानता था कि वह लगातार ऐसी चीजों के पीछे भाग रहा है, जिनका अंत नहीं है।

डायोजनीज ने शांत स्वर में कहा कि यह कुत्ता अपनी जरूरत को जानता है। उसे धूप से परेशानी हुई तो छांव में चला गया। उसे किसी से शिकायत नहीं करनी पड़ी, न ही उसने किसी और की छांव छीनने की कोशिश की। वह जितना चाहता था, उतने में संतुष्ट था। मनुष्य की समस्या यह नहीं है कि उसके पास कम है, बल्कि यह है कि वह जितना है, उससे संतुष्ट नहीं होता। इच्छाएं ऐसी आग हैं, जिन्हें जितना ईंधन दो, उतनी ही भड़कती हैं। जो व्यक्ति अपने भीतर के खालीपन को बाहरी वस्तुओं से भरना चाहता है, वह जीवन भर खाली ही रहता है।

युवक ने यह बातें सुनीं, लेकिन उसका मन अभी भी पूरी तरह आश्वस्त नहीं हुआ था। उसने कहा कि समाज में सम्मान, शक्ति और संपत्ति के बिना कोई नहीं सुना जाता। यदि मनुष्य के पास ये न हों, तो उसे तुच्छ समझा जाता है। डायोजनीज हंसे और बोले कि समाज का पैमाना अक्सर उल्टा होता है। यहां व्यक्ति को उसकी आत्मा से नहीं, उसकी संपत्ति से तौला जाता है। लेकिन जिसने भीतर की शांति पा ली, उसे बाहर की स्वीकृति की आवश्यकता नहीं रहती। जिसने खुद को समझ लिया, उसे दुनिया की राय से डर नहीं लगता।

उन्होंने युवक को अपने घड़े की ओर इशारा किया और कहा कि यही मेरा घर है। न ताले की जरूरत, न पहरे की चिंता। मुझे डर नहीं कि कोई मुझसे कुछ छीन लेगा, क्योंकि मेरे पास ऐसा कुछ है ही नहीं, जिसे छीना जा सके। यह कहते हुए उन्होंने जमीन पर पड़ा एक कटोरा उठाया और फिर कुछ देर बाद उसे भी फेंक दिया। युवक चौंक गया। डायोजनीज ने बताया कि जब उन्होंने एक बच्चे को हाथ से पानी पीते देखा, तो उन्हें लगा कि कटोरा भी अनावश्यक है। जिस क्षण मनुष्य यह समझ लेता है कि उसकी जरूरतें कितनी कम हैं, उसी क्षण वह मुक्त हो जाता है।

धीरे-धीरे युवक के भीतर कुछ बदलने लगा। उसे अपने जीवन की भागदौड़ याद आने लगी। कैसे वह एक उपलब्धि के बाद दूसरी की ओर दौड़ता रहा, कैसे हर खुशी क्षणिक साबित हुई और कैसे हर इच्छा के पूरा होने के बाद नई इच्छा जन्म लेती गई। उसने पहली बार यह सोचा कि शायद समस्या दुनिया में नहीं, बल्कि उसके अपने मन में है। उसने डायोजनीज से पूछा कि फिर सुख क्या है। डायोजनीज ने कहा कि सुख कोई वस्तु नहीं, जिसे पाया जाए। वह एक अवस्था है, जो तब आती है, जब मन शांत हो जाता है। जब तुम जो हो, उसमें सहज हो जाते हो, तब सुख अपने आप प्रकट हो जाता है।

युवक उस दिन देर तक डायोजनीज के पास बैठा रहा। उसने जाना कि सादगी गरीबी नहीं होती और संतोष कमजोरी नहीं। बल्कि यह सबसे बड़ी शक्ति है, क्योंकि संतुष्ट व्यक्ति को कोई लालच नहीं दे सकता, कोई भय नहीं दिखा सकता। वह व्यक्ति अपने निर्णय स्वयं लेता है, दूसरों की अपेक्षाओं से मुक्त होकर जीता है। जब शाम ढलने लगी, तो युवक ने विदा ली। उसके चेहरे पर अब भी प्रश्न थे, लेकिन साथ ही एक हल्की-सी शांति भी थी, जो पहले नहीं थी।

समय बीतता गया। कहा जाता है कि वह युवक धीरे-धीरे अपने जीवन में बदलाव लाने लगा। उसने धन का त्याग नहीं किया, लेकिन धन को अपने जीवन का लक्ष्य बनाना छोड़ दिया। उसने दिखावे से दूरी बनाई और अपने भीतर झांकने का अभ्यास शुरू किया। उसे यह समझ में आने लगा कि सच्चा सुख संग्रह में नहीं, बल्कि समझ में है। जितना अधिक वह स्वयं को जानने लगा, उतना ही हल्का महसूस करने लगा।

तकनीक और इनोवेशन के साथ बढ़ती जिम्मेदारियां

वर्ष 2025 तकनीक और इनोवेशन के इतिहास में निर्णायक पड़ाव के रूप में दर्ज हो रहा है। यह वर्ष तकनीक के आम जीवन, शासन, अर्थव्यवस्था और वैश्विक शक्ति-संतुलन पर गहरा प्रभाव डालने वाला रहा है। भारत से लेकर दुनिया तक, आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस, सेमीकंडक्टर, 5जी-6जी, ग्रीन टेक्नोलॉजी, स्पेस टेक और डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर नीति और विकास का केंद्रबिंदु बन चुके हैं। वर्ष 2025 में एआई ने ‘भविष्य की तकनीक’ से निकलकर ‘वर्तमान की वास्तविकता’ का रूप ले लिया। जनरेटिव एआई अब कंटेंट लिखने या चैटबॉट तक सीमित नहीं रहा है। हेल्थकेयर में रोगों की प्रारंभिक पहचान, कृषि में फसल अनुमान, न्याय व्यवस्था में दस्तावेज़ विश्लेषण और उद्योगों में निर्णय-निर्माण तक एआई की पैठ गहरी हुई।

भारत में एआई का उपयोग सरकारी योजनाओं की निगरानी, डिजिटल शिक्षा और स्किल डेवलपमेंट में तेज़ी से बढ़ा। वहीं दुनिया के स्तर पर एआई रेगुलेशन एक बड़ा मुद्दा बना। यूरोपियन यूनियन ने एआई एक्ट के ज़रिये नियंत्रण की कोशिश की, जबकि अमेरिका और चीन एआई नेतृत्व की होड़ में और आक्रामक होते दिखे। वर्ष 2025 यह भी सिखा गया कि एआई जितना शक्तिशाली है, उतना ही जिम्मेदारी और नैतिकता की मांग भी करता है। यह वर्ष तकनीकी आत्मनिर्भरता को एक वैश्विक रणनीतिक विषय के रूप में उभारने वाला रहा है। सेमीकंडक्टर अब केवल इलेक्ट्रॉनिक चिप नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक शक्ति का प्रतीक बन गए। भारत ने सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग की दिशा में ठोस कदम उठाए।

Advertisement

दुनिया में अमेरिका-चीन तकनीकी प्रतिस्पर्धा तेज़ हुई। टेक सप्लाई चेन को ‘फ्रेंड-शोरिंग’ की दिशा में मोड़ा गया। आने वाले वर्षों में तकनीक केवल बाज़ार का नहीं, बल्कि भू-राजनीति का भी हथियार बनेगी।

भारत सहित कई देशों में बड़े पैमाने पर 5जी आकार ले चुका है। लेकिन असली बदलाव इसके उपयोग में दिखा—स्मार्ट सिटी, रिमोट हेल्थकेयर, इंडस्ट्रियल ऑटोमेशन और स्मार्ट विलेज जैसी अवधारणाएं ज़मीन पर उतरती दिखीं। भारत में 5जी आधारित शिक्षा, कृषि सलाह और टेलीमेडिसिन ने डिजिटल डिवाइड को कम करने की नई उम्मीद जगाई है। इसी बीच दुनिया 6जी की तैयारी में जुट गई। 6जी रिसर्च, स्पीड और अल्ट्रा-लो लेटेंसी को लेकर प्रयोगों ने यह संकेत दे दिया कि आने वाला दशक ‘हाइपर-कनेक्टेड’ समाज का होगा।

वहीं, क्लाइमेट चेंज के बढ़ते खतरे ने ग्रीन टेक्नोलॉजी को नवाचार का केंद्र बना दिया। रिन्यूएबल एनर्जी, ग्रीन हाइड्रोजन, बैटरी स्टोरेज और कार्बन कैप्चर टेक्नोलॉजी पर निवेश बढ़ा। भारत ने सोलर और ग्रीन हाइड्रोजन में वैश्विक नेतृत्व की दिशा में कदम बढ़ाए। दुनिया ने यह भी महसूस किया कि एआई और डेटा सेंटर्स की बढ़ती ऊर्जा खपत एक नई चुनौती है।

तकनीक के मोर्चे पर 2025 में देश की सबसे बड़ी पहचान डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर रही। आधार, यूपीआई, डिजिलॉकर और ओपन डिजिटल प्लेटफॉर्म्स ने देश के भीतर और वैश्विक मंच पर भी भारत को एक मॉडल के रूप में स्थापित किया। यूपीआई का अंतरराष्ट्रीय विस्तार, डिजिटल भुगतान की बढ़ती स्वीकार्यता और सरकारी सेवाओं का डिजिटलीकरण यह दिखाता है कि तकनीक कैसे लोकतांत्रिक विकास का औज़ार बन सकती है।

इस वर्ष अंतरिक्ष तकनीक केवल सरकारों तक सीमित नहीं रही। भारत में निजी स्पेस स्टार्टअप्स, सैटेलाइट, लॉन्च व्हीकल और स्पेस डेटा एनालिटिक्स के क्षेत्र में आगे बढ़े। इसरो की उपलब्धियों के साथ-साथ निजी कंपनियों की भागीदारी ने स्पेस इकोनॉमी को नई गति दी। दुनिया में भी स्पेस टेक, क्वांटम कंप्यूटिंग और बायोटेक जैसे क्षेत्रों में स्टार्टअप्स ने यह दिखाया कि नवाचार अब केवल सिलिकॉन वैली तक ही सीमित नहीं है। हालांकि, वर्ष 2025 तकनीकी उपलब्धियों का साल रहा, लेकिन कई सवाल भी छोड़ गया। डेटा प्राइवेसी, साइबर सुरक्षा, रोजगार पर ऑटोमेशन का प्रभाव और डिजिटल असमानता जैसे मुद्दे और गहरे हुए। तकनीक ने अवसर बढ़ाए, लेकिन साथ ही सामाजिक-नैतिक ज़िम्मेदारियां भी बढ़ीं।

सरकारी योजनाओं की मॉनिटरिंग, कृषि सलाह, भाषा अनुवाद और डिजिटल शिक्षा में एआई का उपयोग बढ़ा। वहीं दुनिया भर में एआई को लेकर यह बहस तेज़ हुई कि क्या मशीनें इंसानी नौकरियों को निगल जाएंगी। वर्ष 2025 ने साफ़ किया कि एआई रोजगार छीनने के साथ-साथ नए कौशल और नए अवसर भी पैदा कर रही है।

तकनीक के लिहाज़ से 2025 को ‘संक्रमण का वर्ष’ कहा जा सकता है—जहां दुनिया ने तय किया कि तकनीक केवल सुविधा नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा तय करने वाली शक्ति है। आने वाले वर्षों में यह इस बात पर निर्भर करेगा कि हम तकनीक को केवल तेज़ी से अपनाते हैं या उसे समझदारी, समावेशन और सतत विकास के साथ आगे बढ़ाते हैं।

अभियान

रामनाम का कवच: श्रद्धा, विश्वास और सुरक्षा की दिव्य यात्रा

सनातन परंपरा में कुछ स्तोत्र ऐसे माने गए हैं जो केवल शब्द नहीं, बल्कि साधक के लिए जीवंत सुरक्षा कवच बन जाते हैं। रामरक्षा स्तोत्र भी उन्हीं में से एक है। यह केवल एक धार्मिक पाठ नहीं, बल्कि भय, संकट, अस्थिरता और मानसिक अशांति से घिरे मनुष्य के लिए आस्था का ऐसा सहारा है, जो उसे भीतर से मजबूत करता है। कहा जाता है कि जिस प्रकार युद्ध में जाने वाला योद्धा अपने शरीर पर कवच धारण करता है, उसी प्रकार जीवन के संघर्षों में उतरने से पहले रामरक्षा स्तोत्र का पाठ मनुष्य को अदृश्य लेकिन अत्यंत प्रभावशाली सुरक्षा प्रदान करता है। यह स्तोत्र भगवान श्रीराम के नाम, गुण और तेज का ऐसा संकलन है, जो साधक के चारों ओर दिव्य ऊर्जा का घेरा बना देता है।

रामरक्षा स्तोत्र की रचना महर्षि बुधकौशिक ने की थी। परंपरा के अनुसार यह स्तोत्र स्वयं भगवान शिव की प्रेरणा से प्रकट हुआ और इसका उद्देश्य मनुष्य को भयमुक्त करना, संकटों से रक्षा करना और धर्म के मार्ग पर स्थिर रखना था। श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम कहा गया है, क्योंकि उनका जीवन स्वयं एक आदर्श है—कर्तव्य, त्याग, धैर्य और करुणा का आदर्श। जब कोई व्यक्ति रामरक्षा स्तोत्र का पाठ करता है, तो वह केवल श्रीराम के नाम का उच्चारण नहीं करता, बल्कि उनके आदर्शों को भी अपने भीतर उतारने का प्रयास करता है। यही कारण है कि इस स्तोत्र का प्रभाव केवल बाहरी परिस्थितियों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि व्यक्ति के स्वभाव और सोच में भी परिवर्तन लाता है।

कहा जाता है कि रामरक्षा स्तोत्र का नियमित पाठ करने से मनुष्य भय से मुक्त हो जाता है। आज के समय में भय केवल शारीरिक खतरे का नहीं होता, बल्कि मानसिक तनाव, भविष्य की चिंता, असफलता का डर और अपनों को खोने की आशंका भी मनुष्य को भीतर से कमजोर कर देती है। रामरक्षा स्तोत्र का पाठ इन सभी आशंकाओं को शांत करता है। जब साधक रोजाना श्रद्धा के साथ इस स्तोत्र का जाप करता है, तो उसके भीतर यह विश्वास जाग्रत होता है कि वह अकेला नहीं है, श्रीराम की कृपा और संरक्षण उसके साथ है। यही विश्वास धीरे-धीरे भय को साहस में बदल देता है।

रामरक्षा स्तोत्र को एक ऐसा दिव्य कवच माना गया है, जो साधक के चारों ओर अदृश्य सुरक्षा घेरा बना देता है। यह सुरक्षा केवल बाहरी दुर्घटनाओं या शत्रुओं से ही नहीं, बल्कि नकारात्मक विचारों, ईर्ष्या, क्रोध और अवसाद जैसी आंतरिक बाधाओं से भी रक्षा करती है। कहा जाता है कि जो व्यक्ति नियमित रूप से रामरक्षा स्तोत्र का पाठ करता है, उसके जीवन में आने वाली बाधाएं स्वयं ही मार्ग बदल लेती हैं। कठिन परिस्थितियां भी उसे तोड़ने के बजाय मजबूत बना देती हैं। यही कारण है कि इस स्तोत्र को संकटमोचक माना गया है।

धार्मिक मान्यता है कि रामरक्षा स्तोत्र का पाठ करने से भगवान श्रीराम के साथ-साथ हनुमान जी भी अत्यंत प्रसन्न होते हैं। हनुमान जी को श्रीराम का अनन्य भक्त और महान रक्षक माना गया है। जहां श्रीराम का नाम होता है, वहां हनुमान जी की कृपा स्वयं उपस्थित रहती है। इसलिए रामरक्षा स्तोत्र का पाठ करने वाला व्यक्ति न केवल रामकृपा का पात्र बनता है, बल्कि उसे हनुमान जी की शक्ति, साहस और निर्भयता भी प्राप्त होती है। यही कारण है कि यह स्तोत्र विशेष रूप से उन लोगों के लिए भी उपयोगी माना जाता है, जो जीवन में बार-बार बाधाओं, शत्रु भय या असफलताओं का सामना कर रहे हों।

रामरक्षा स्तोत्र का पाठ किसी विशेष समय या परिस्थिति तक सीमित नहीं है। इसे सुबह, दोपहर या रात किसी भी समय किया जा सकता है। हालांकि प्रातःकाल शांत मन से किया गया पाठ अधिक फलदायी माना गया है, क्योंकि उस समय वातावरण और मन दोनों ही शुद्ध होते हैं। फिर भी यह भी कहा गया है कि सच्ची श्रद्धा समय की मोहताज नहीं होती। जो व्यक्ति विश्वास और भाव के साथ इस स्तोत्र का पाठ करता है, उसे अवश्य ही फल प्राप्त होता है। यह स्तोत्र उन लोगों के लिए भी सहारा बनता है, जो जीवन में दिशा खो चुके हों या जिनका आत्मविश्वास डगमगा गया हो।

रामरक्षा स्तोत्र का प्रभाव धीरे-धीरे साधक के जीवन में दिखाई देने लगता है। नियमित पाठ से व्यक्ति के भीतर धैर्य और संयम का विकास होता है। छोटी-छोटी बातों पर क्रोध या निराशा कम होने लगती है। मन अधिक स्थिर और सकारात्मक हो जाता है। ऐसा नहीं है कि कठिनाइयां पूरी तरह समाप्त हो जाती हैं, बल्कि यह होता है कि व्यक्ति उन्हें सहने और उनसे निकलने की शक्ति प्राप्त कर लेता है। यही वास्तविक सुरक्षा है—परिस्थितियों से भागना नहीं, बल्कि उनका सामना करने का साहस। शास्त्रों में कहा गया है कि रामरक्षा स्तोत्र का पाठ करने वाला व्यक्ति सुखी, विजयी, दीर्घायु, संततिवान और विनयशील होता है। इसका अर्थ यह नहीं कि वह संसारिक कर्तव्यों से विमुख हो जाता है, बल्कि वह अपने कर्तव्यों को अधिक संतुलित और धर्मपूर्ण तरीके से निभाने लगता है। उसके जीवन में संबंधों की मधुरता बढ़ती है, कार्यक्षेत्र में स्थिरता आती है और मन में संतोष का भाव विकसित होता है। धीरे-धीरे उसके जीवन में एक ऐसा संतुलन बनता है, जहां भौतिक और आध्यात्मिक दोनों पक्ष एक-दूसरे के पूरक बन जाते हैं।

आज के तेज़ रफ्तार जीवन में, जहां हर व्यक्ति किसी न किसी चिंता से घिरा हुआ है, रामरक्षा स्तोत्र एक शांत आश्रय की तरह है। यह मनुष्य को याद दिलाता है कि शक्ति केवल बाहरी साधनों में नहीं, बल्कि आस्था और विश्वास में भी होती है। जब मनुष्य स्वयं को श्रीराम के चरणों में समर्पित करता है, तो उसका अहंकार, भय और असुरक्षा धीरे-धीरे पिघलने लगती है। उसके स्थान पर विश्वास, धैर्य और साहस जन्म लेते हैं। रामरक्षा स्तोत्र का पाठ वस्तुतः एक साधना है, जो मनुष्य को भीतर से शुद्ध करती है। यह उसे सिखाती है कि संकट स्थायी नहीं होते, लेकिन आस्था स्थायी हो सकती है। जो व्यक्ति प्रतिदिन इस स्तोत्र का पाठ करता है, उसके जीवन में एक अदृश्य अनुशासन आ जाता है। उसका मन भटकाव से दूर होकर स्थिरता की ओर बढ़ने लगता है। यही कारण है कि सदियों से यह स्तोत्र लोगों के जीवन का अभिन्न हिस्सा बना हुआ है।

अंततः रामरक्षा स्तोत्र केवल शब्दों का संग्रह नहीं, बल्कि श्रीराम की कृपा से जुड़ने का माध्यम है। यह मनुष्य को यह अनुभूति कराता है कि वह अकेला नहीं है, हर कदम पर एक दिव्य शक्ति उसका मार्गदर्शन कर रही है। जब यह भावना भीतर गहराई से बस जाती है, तब जीवन की कोई भी विपत्ति व्यक्ति को विचलित नहीं कर पाती। यही रामरक्षा स्तोत्र का वास्तविक फल है—भीतर की निर्भयता, बाहर की सुरक्षा और जीवन में स्थायी शांति।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH

हर घर स्वदेशी
घर-घर स्वदेशी

सत्यमेव जयते
गुजरात सरकार

परम श्रद्धेय

श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की

जन्म जयंती पर कोटि-कोटि वंदन...

२५ दिसंबर
सुशासन दिवस

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

श्री भूपेन्द्रभाई पटेल
माननीय मुख्यमंत्री, गुजरात

सुशासन को मिलेगा नया आयाम

AB PMJAY-MA योजना
- लाभार्थियों को क्लेम भुगतान में **गुजरात सतत अग्रणी**

राजस्व सुधार
- राजस्व कानून बने अधिक सरल
- iORA पोर्टल पर **तीन वर्षों में १७.९ लाख** से अधिक आवेदन प्रोसेस किए गए

महिला सशक्तिकरण
- दो वर्षों में राज्य में लखपति दीदी की संख्या **५.९६ लाख** के पार

स्टार्टअप को सरकारी प्रोत्साहन
- स्टूडेंट स्टार्टअप एंड इनोवेशन **पॉलिसी २.० के तहत पिछले ४ वर्षों** में राज्य सरकार द्वारा **१५०० से अधिक स्टार्टअप्स** को सहायता

मुख्यमंत्री पौष्टिक अल्पाहार योजना
- राज्य के **४० लाख** से अधिक बच्चों को **शिक्षा के साथ-साथ पोषण भी** उपलब्ध
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के **"पोषण भी, पढ़ाई भी"** के संकल्प को साकार करती गुजरात सरकार

किसानों को दिन में बिजली
- **किसान सूर्योदय योजना** के माध्यम से राज्य में **१९ लाख** से अधिक किसानों को **दिन में बिजली की सुविधा**

"सशक्त और समृद्ध गुजरात के लिए सुशासन एक बुनियादी आवश्यकता है"

-श्री हर्ष संघवी, माननीय उपमुख्यमंत्री, गुजरात

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल का 'स्वागत' ऑनलाइन जन शिकायत निवारण कार्यक्रम में आने वाली नागरिकों की प्रस्तुतियों का सामूहिक प्रयासों से आवश्यक निवारण लाने हेतु राज्य सरकार के विभागों से अनुरोध

- किसानों के प्रति मुख्यमंत्री की विशेष संवेदनशीलता
- जूनागढ और मेहसाणा जिलों के किसानों की अधिग्रहित भूमि का मुआवजा तत्काल भुगतान करने के लिए जिला कलेक्टरों को निर्देश
- कालोल नगरपालिका के सड़क-मार्ग एवं नाली के कार्यों की क्वालिटी में लापरवाही बरतने वालों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई के दिशानिर्देश
- मुख्यमंत्री के समक्ष दिसंबर 2025 के राज्य 'स्वागत' में 97 से अधिक प्रस्तुतिकर्ताओं की प्रस्तुतियां आईं

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने बुधवार को दिसंबर 2025 के राज्य 'स्वागत' में प्रस्तुति करने आए नागरिकों की प्रस्तुतियां प्रत्यक्ष रूप से सुनकर उनके उचित निवारण हेतु संबंधित विभागों को निर्देश दिए। इस संदर्भ में उन्होंने राज्य के विभागों एवं प्रशासन के अधिकारियों को यह भी सख्त निर्देश दिया कि 'स्वागत' में आने वाली प्रस्तुतियों का निवारण सामूहिक प्रयासों से किया जाना चाहिए। हर महीने के चौथे गुरुवार को आयोजित होने वाले 'स्वागत' ऑनलाइन जन शिकायत निवारण कार्यक्रम के उपक्रम में दिसंबर 2025 का राज्य 'स्वागत' कार्यक्रम बुधवार को आयोजित हुआ। कार्यक्रम के दौरान राज्य भर से 97 से अधिक प्रस्तुतिकर्ता अपनी प्रस्तुतियों के साथ उपस्थित हुए। इतना हीं नहीं, जिला स्वागत की 1,284 तथा तहसील स्वागत की 2,458 प्रस्तुतियों-प्रश्नों के संदर्भ में जिला तहसील स्तर पर निवारण की कार्यवाही भी की गई।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने उनके समक्ष आई प्रस्तुतियों के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाते हुए उनके उचित निवारण के लिए संबंधित जिला कलेक्टरों को स्पष्ट निर्देश दिए। उन्होंने जूनागढ जिले की केशोद तहसील के एक धरती पुत्र को उसके खेत तक जाने के लिए रास्ता स्थानीय स्थिति की आवश्यक जांच कर उपलब्ध कराने के निर्देश जिला कलेक्टर को दिए।

इसके अतिरिक्त, श्री पटेल ने कलेक्टर को सीपू योजना के अंतर्गत साबरमती सरस्वती लिंक कैनाल योजना में मेहसाणा के किसान की अधिग्रहित कृषि भूमि का मुआवजा तत्काल भुगतान करने के निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने नगरों में इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट तथा नागरिक सुविधाओं के कार्यों में क्वालिटी बनी रहे, यह सुनिश्चित करने पर भी जोर दिया तथा ऐसे कार्यों में लापरवाही या निष्क्रियता बरतने वालों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करने के निर्देश दिए।

वापी नगर पालिका क्षेत्र में संयुक्त स्वामित्व वाली भूमि में अंडरग्राउंड ड्रेनेज कनेक्शन हेतु हो रहे अवरोधों को दूर कर यह कनेक्शन तत्काल देने तथा बाबरा तहसील के प्रस्तुतिकर्ता को सरकार द्वारा आवंटित निःशुल्क आवासीय प्लॉट को गांव के नमूने में दर्ज कर स्वामित्व अधिकार प्रदान करने के लिए मुख्यमंत्री ने संबंधित अधिकारियों को कार्रवाई करने के निर्देश दिए।

इस राज्य 'स्वागत' में मुख्यमंत्री के अपर मुख्य सचिव डॉ. विक्रांत पांडे, विशेष कार्य अधिकारी श्री धीरज पारेख एवं श्री राकेश व्यास, साथ ही संबंधित विभागों के सचिव गांधीनगर से तथा जिला कलेक्टर वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से जुड़े ।

वडोदरा स्टेशन पर इंजीनियरिंग कार्य हेतु ब्लॉक के कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित रहेगी

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के वडोदरा स्टेशन पर लाइन नं 3 पर इंजीनियरिंग कार्य (Complete Track Renewal) हेतु 24 दिसंबर 2025 से 17 जनवरी 2025 तक ब्लॉक लिया गया है। जिसके कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित होगी। प्रभावित ट्रेनों का विवरण निम्नानुसार है:-

शॉर्ट टर्मिनेट होने वाली ट्रेनें

1.ट्रेन संख्या 69108 अहमदाबाद-वडोदरा मेमू दिनांक 24.12.2025 से 17.01.2026 तक बाजवा स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा यह ट्रेन बाजवा-वडोदरा के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

2.ट्रेन संख्या 69102 अहमदाबाद-वडोदरा मेमू दिनांक 24.12.2025 से 17.01.2026 तक बाजवा स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा यह ट्रेन बाजवा-वडोदरा के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

3.ट्रेन संख्या 19036 अहमदाबाद-वडोदरा इंटरसिटी एक्सप्रेस दिनांक 24.12.2025 से 17.01.2026 तक बाजवा स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा यह ट्रेन बाजवा-वडोदरा के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

4.ट्रेन संख्या 12929 वलसाड -वडोदरा इंटरसिटी दिनांक 24.12.2025 से 17.01.2026 तक विश्वामित्री स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा यह ट्रेन विश्वामित्री -वडोदरा के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

5.ट्रेन संख्या 69120 दाहोद -वडोदरा मेमू दिनांक 24.12.2025 से 17.01.2026 तक छायापुरी स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा यह ट्रेन छायापुरी-वडोदरा के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

6.ट्रेन संख्या 69118 गोधरा -वडोदरा मेमू दिनांक 24.12.2025 से 17.01.2026 तक छायापुरी स्टेशन पर शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा यह ट्रेन छायापुरी-वडोदरा के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

शॉर्ट ओरिजिनेट (प्रारम्भ) होने वाली ट्रेनें

1.ट्रेन संख्या 69107 वडोदरा-अहमदाबाद मेमू दिनांक 24.12.2025 से 17.01.2026 तक बाजवा स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी तथा वडोदरा-बाजवा के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

2.ट्रेन संख्या 19035 वडोदरा-अहमदाबाद इंटरसिटी एक्सप्रेस दिनांक 24.12.2025 से 17.01.2026 तक बाजवा स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी तथा वडोदरा-बाजवा के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

3.ट्रेन संख्या 69119 वडोदरा - दाहोद मेमू दिनांक 24.12.2025 से 17.01.2026 तक छायापुरी स्टेशन से शॉर्ट ओरिजिनेट होगी तथा वडोदरा-छायापुरी के बीच आंशिक निरस्त रहेगी।

यात्रियों से अनुरोध है कि उपरोक्त बदलाव को ध्यान में रखकर यात्रा करे।ट्रेनों के ठहराव, समय और संरचना के संबंध में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के करकमलों से गांधीनगर में टाइप-1 डायबिटीज कार्यक्रम का राज्यव्यापी प्रारंभ

- दूरदराजी क्षेत्रों के प्राथमिक एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों में भी टाइप-1 डायबिटीज के उपचार का लाभ देकर इस रोग से पीड़ित सभी बच्चों को उपचार अंतर्गत लाने का स्वास्थ्य सेवा-उन्मुखी दृष्टिकोण
- मुख्यमंत्री ने टाइप-1 डायबिटीज से पीड़ित एक भी बच्चा उपचार सुविधा से वंचित न रह जाए; ऐसी सघन व्यवस्था की मंशा व्यक्त की
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दिशादर्शन में बाल स्वास्थ्य देखभाल के लिए राज्य सरकार ने प्रिकॉशन, प्रिवेंशन तथा पॉजिटिव लाइफस्टाइल पर फोकस किया है : मुख्यमंत्री

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने राज्य में टाइप-1 डायबिटीज (जुवेनाइल डायबिटीज) से पीड़ित एक भी बच्चा उपचार-सुविधा से वंचित न रहे; ऐसी सघन उपचार व्यवस्था की राज्य सरकार की मंशा व्यक्त की है। श्री पटेल ने टाइप-1 डायबिटीज (जुवेनाइल डायबिटीज) उपचार-नियंत्रण कार्यक्रम का बुधवार को गांधीनगर से प्रारंभ कराते हुए यह मंशा व्यक्त की। उन्होंने कहा कि राज्य के दूरदराजी क्षेत्रों के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों (पीएचसी) तथा सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों (सीएचसी) में भी टाइप-1 डायबिटीज के उपचार का लाभ उपलब्ध हो और इस रोग से पीड़ित सभी बच्चों को उपचार अंतर्गत लाया जाए; ऐसे स्वास्थ्य सेवा-उन्मुखी दृष्टिकोण से हम यह राज्यव्यापी अभियान शुरू कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने स्वस्थ एवं समृद्ध राष्ट्र के निर्माण का संकल्प किया है। इसके लिए उन्होंने छोटे से छोटे व्यक्ति को भी श्रेष्ठ स्वास्थ्य सेवाएँ मुहैया कराने हेतु आयुष्मान भारत जैसी विश्व की सबसे बड़ी स्वास्थ्य सुरक्षा-देखभाल योजना शुरू की है। मुख्यमंत्री ने कहा कि इतना ही नहीं; लोग निरोगी रहें, इसके लिए प्रधानमंत्री ने योग के प्रचार-प्रसार को भी महत्व दिया है। इसके बावजूद अगर कोई गंभीर बीमारी से पीड़ित हो जाए, तो आयुष्मान कार्ड से सरकार उसके उपचार के लिए उसके साथ खड़ी है। योग से आयुष्मान की प्रधानमंत्री की यह विशिष्ट संकल्पना है। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि राज्य सरकार ने भी टाइप-1 डायबिटीज पीड़ित बच्चों के सटीक निदान एवं समय पर उपचार द्वारा इस रोग को नियंत्रित करने का संकल्प किया है।

उन्होंने राज्यव्यापी अभियान के प्रारंभ होने के अवसर पर टाइप-1 डायबिटीज पीड़ित बच्चों को उपचार किट का वितरण करते हुए कहा कि ऐसे बच्चों के उपचार का बोझ परिवार पर न आ पड़े; इसके लिए राज्य सरकार निःशुल्क इंजेक्शन, ग्लूकोमीटर तथा अन्य आवश्यक उपचार सामग्री प्रदान करती है। श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दिशादर्शन में राज्य सरकार ने बाल स्वास्थ्य देखभाल के लिए प्रिकॉशन, प्रिवेंशन तथा पॉजिटिव लाइफस्टाइल; तीनों पर फोकस किया है। राज्य के विद्यालयों में शाला स्वास्थ्य अभियान शुरू कर हर वर्ष 1 करोड़ से अधिक बच्चों की स्वास्थ्य जाँच की जाती है। उन्होंने कहा कि इस जाँच के दौरान यदि किसी बच्चे को अधिक उपचार की जरूरत प्रतीत हो, तो सरकारी अस्पतालों में रीफर कर किडनी, हृदय रोग, कैंसर, लिवर ट्रांसप्लांट जैसा सुपर स्पेशलिस्ट उपचार राज्य सरकार निःशुल्क उपलब्ध कराती है। पिछले 11 वर्षों में 2 लाख 18 हजार से अधिक बच्चों को इस तरह का उपचार दिया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज की लाइफस्टाइल तथा स्ट्रेसफुल जीवनशैली के कारण वयस्क एवं युवावस्था में भी डायबिटीज की व्यापकता बढ़ रही है। जीवनशैली में बदलाव लाकर उसे दूर किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश में बढ़ती जा रही मेदस्विता को लेकर लोगों को सावधान होने के लिए भोजन में तेल का उपयोग 10 प्रतिशत घटाने और नियमित व्यायाम को जीवन का हिस्सा बनाने की अपील की है। मुख्यमंत्री ने सभी से इस अपील को अपनाने का अनुरोध किया। मुख्यमंत्री ने विकसित भारत@2047 के प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए संकल्प को स्वस्थ एवं समृद्ध विकसित गुजरात से साकार करने का भी आह्वान किया। इस राज्यव्यापी अभियान के प्रारंभ अवसर पर गांधीनगर की महापौर श्रीमती मीराबेन पटेल, विधायक श्रीमती रीटाबेन पटेल, गांधीनगर जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती शिल्पाबेन पटेल, शहर भाजपा अध्यक्ष डॉ. आशित दवे, जिला भाजपा अध्यक्ष श्री अनिलभाई पटेल, जिला-शहर के पदाधिकारी, स्वास्थ्य विभाग के प्रधान सचिव श्री धनंजय द्विवेदी, मुख्यमंत्री के अपर प्रधान सचिव डॉ. विक्रांत पांडे, ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के स्वास्थ्य आयुक्त श्री हर्षद पटेल व डॉ. रतनकँवर गढवी चारण, स्वास्थ्य विभाग के वरिष्ठ अधिकारी, चिकित्सक, बच्चे और उनके परिजन उपस्थित रहे।

रूफटॉप सोलर में गुजरात अव्वल: 5 लाख इंस्टॉलेशंस, 1,879 मेगावाट क्षमता हासिल

- रूफटॉप सोलर के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए गुजरात सरकार दे रही 78,000 तक कई आकर्षक सब्सिडीज़
- मार्च 2027 तक 10 लाख आवासीय रूफटॉप सोलर सिस्टम स्थापित करने के लक्ष्य का 50 प्रतिशत समय से पहले किया पूरा
- आगामी VGRC, राजकोट में प्रदर्शित होगा गुजरात का रूफटॉप सोलर सफलता मॉडल

(जीएनएस)। गांधीनगर : गुजरात ने नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक उपलब्धि दर्ज करते हुए 5 लाख से अधिक रूफटॉप सोलर सिस्टम स्थापित कर लिए हैं, जिनकी कुल स्थापित क्षमता 1,879 मेगावाट है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रारंभ की गई पीएम सूर्य घरः मुफ्त बिजली योजना के तहत प्राप्त यह उपलब्धि रूफटॉप सोलर को अपनाने में गुजरात की अग्रणी भूमिका को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

उल्लेखनीय है कि गुजरात सरकार की विभिन्न योजनाओं और प्रोत्साहन पहलों के तहत अब तक गुजरात में कुल मिलाकर 11 लाख से अधिक सोलर रूफटॉप सिस्टम स्थापित किए जा चुके हैं। इतना ही नहीं, गुजरात ने मार्च 2027 तक 10 लाख आवासीय रूफटॉप सोलर सिस्टम स्थापित करने के महत्वाकांक्षी लक्ष्य का 50 प्रतिशत भी समय से पहले ही हासिल कर लिया है।

इस महत्वपूर्ण उपलब्धि पर गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा, "वर्तमान समय सौर, पवन और हाइब्रिड नवीकरणीय ऊर्जा के साथ-साथ ग्रीन हाइड्रोजन द्वारा संचालित ग्रीन ग्रोथ से परिभाषित होता है। गुजरात ने लंबे समय से इस बदलाव की तैयारी की है और आज राज्य भारत की कुल नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। विशेष रूप से, गुजरात सोलर रूफटॉप योजना में देश में अग्रणी है और सतत प्रगति के लिए मानक स्थापित कर रहा है। यह उपलब्धि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व के तहत संभव हुई है, जिनकी नवीकरणीय ऊर्जा और सतत विकास के प्रति प्रतिबद्धता ने गुजरात को अपने विज़न को वास्तविकता में बदलने के लिए प्रेरित और सक्षम किया है।"

रूफटॉप सोलर अपनाना हुआ अब और भी आसान, गुजरात सरकार दे रही कई आकर्षक सब्सिडीज़

रूफटॉप सोलर को व्यापक रूप से अपनाने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में राज्य सरकार द्वारा आकर्षक सब्सिडी लाभ प्रदान किए जा रहे हैं। इसके तहत 2 किलोवाट तक की क्षमता वाले सिस्टम पर 30,000 प्रति किलोवाट, 2 किलोवाट से अधिक और 3 किलोवाट तक की क्षमता पर 18,000 प्रति किलोवाट की सब्सिडी दी जा रही है, जबकि 3 किलोवाट से अधिक क्षमता वाले सिस्टम के लिए अधिकतम 78,000 तक की सब्सिडी का प्रावधान है। अब तक आवासीय उपभोक्ताओं को इस योजना के अंतर्गत 3,778 करोड़ की सब्सिडी का लाभ मिल चुका है।

इतना ही नहीं, राज्य में 6 किलोवाट तक के सिस्टम के लिए 2,950 तक नियामक शुल्क सहायता भी दी जाती है, नेटवर्क सुदृढ़ीकरण शुल्क माफ किया गया है और उपभोक्ताओं को नेट मीटरिंग समझौते से भी छूट दी गई है। इसके अतिरिक्त, आवासीय सोलर इंस्टॉलेशन के लिए कोई लोड सीमा नहीं है। साथ ही, उपभोक्ताओं को अतिरिक्त बिजली बेचने की सुविधा मिलती है और उन पर कोई बैंकिंग शुल्क भी नहीं लगाया जाता है।

आगामी VGRC, राजकोट में प्रदर्शित होगा गुजरात का रूफटॉप सोलर सफलता मॉडल

10 जनवरी से राजकोट में आयोजित होने वाले वाइब्रेंट गुजरात रिजनल कॉन्फ्रेंस में गुजरात रूफटॉप सोलर की प्रेरक सफलताओं कहानियों को विशेष रूप से प्रदर्शित किया जाएगा, जिनमें उन घरों की मिसालें होंगी जिन्होंने न केवल अपने बिजली खर्च को कम किया है बल्कि आज वे रूफ़टॉप सोलर से अतिरिक्त बिजली जनरेट कर ग्रिड को भी उपलब्ध करा रहे हैं और इससे अतिरिक्त आय भी अर्जित कर रहे हैं।

गुजरात के जंगलों तथा अरावली पहाड़ियों के संरक्षण के लिए राज्य सरकार सदैव कटिबद्धः वन मंत्री श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया

राज्य के अरावली पर्वतमाला क्षेत्र में आज तक कभी खनन या व्यावसायिक गतिविधियों को अनुमति नहीं दी गई है और भविष्य में भी नहीं दी जाएगी : वन एवं पर्यावरण मंत्री

- अरावली पर्वतमाला के संरक्षण के लिए सुप्रीम कोर्ट के आदेशों का राज्य सरकार सख्ती से पालन करेगी
- 'अरावली ग्रीन वॉल प्रोजेक्ट' अंतर्गत वर्तमान वर्ष में 4,426 हेक्टेयर क्षेत्र में 86.84 लाख पौधों का रोपण किया गया
- आगामी वर्ष में भी 4,890 हेक्टेयर क्षेत्र में वृक्षारोपण एवं संरक्षण का कार्य किया जाएगा

(जीएनएस)। गांधीनगर : गुजरात के वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया ने बुधवार को अरावली पहाड़ियों के संरक्षण और टिकाऊ विकास को लेकर राज्य सरकार का दृढ़ संकल्प व्यक्त करते हुए कहा कि गुजरात सरकार राज्य के वन क्षेत्रों और पर्यावरण की दृष्टि से संवेदनशील क्षेत्रों को बचाने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। गुजरात के विभिन्न जिलों में फैली अरावली पर्वतमाला और उसके वन क्षेत्रों में राज्य सरकार ने आज तक कभी भी खनन की अनुमति नहीं दी है और भविष्य में भी खनन गतिविधियों को अनुमति नहीं दी जाएगी।

श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया ने जोड़ा कि सुप्रीम कोर्ट के आदेश के अनुसार गुजरात सरकार अरावली पहाड़ियों की नई परिभाषा और संरक्षण के सभी पहलुओं का कार्यान्वयन कर रही है। इसके अनुसार, स्थानीय भूतल से 100 मीटर या उससे अधिक ऊंचाई वाले सभी भू-आकारों को 'पर्वत' के रूप में परिभाषित किया गया है, ताकि किसी भी प्रकार की कानूनी बचाव का रास्ता न रहे। इसके अतिरिक्त, 100 मीटर से अधिक ऊंचाई वाले दो या अधिक पर्वतों के बीच के 500 मीटर तक के सभी क्षेत्र को भी अरावली पर्वतमाला का ही भाग माना जाएगा।

उन्होनें स्पष्ट किया कि गुजरात सरकार द्वारा राज्य के संरक्षित क्षेत्रों, इको-सेंसिटिव जोन्स, रिजर्व एरिया, वेटलैंड्स और कैम्पा (CAMPA) बुवाई साइट्स जैसे 'कोर और इनवायलेट' जोन्स में खनन पर पूर्ण प्रतिबंध रहेगा। राज्य सरकार का मुख्य उद्देश्य विकास के साथ पर्यावरण का संरक्षण करना है, ताकि भावी पीढ़ियों को सुरक्षित और हरित गुजरात मिल सके। अरावली पर्वतमाला केवल पत्थरों का ढेर नहीं है, बल्कि यह रेगिस्तान को आगे बढ़ने से रोकने के लिए एक प्राकृतिक अवरोध के रूप में कार्य करती है और भूमिगत जल रिचार्ज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

वन एवं पर्यावरण मंत्री ने 'अरावली ग्रीन वॉल प्रोजेक्ट' का उल्लेख करते हुए कहा कि इस प्रोजेक्ट अंतर्गत गुजरात के साबरकांठा, अरवल्ली, बनासकांठा, मेहसाणा, महिसागर, दाहोद और पंचमहल जिलों के कुल 3,25,511 हेक्टेयर वन क्षेत्र को शामिल किया गया है। इसमें ग्रीन कवर को बढ़ाने के लिए वर्ष 2025-26 के दौरान कुल 4,426 हेक्टेयर क्षेत्र में 86.84 लाख स्थानीय प्रजातियों के पौधों की बुवाई की गई है।

इसके अतिरिक्त; मंत्री श्री अर्जुन मोढावाडिया ने अंत में कहा कि 150 हेक्टेयर क्षेत्र से बबूल और लेंटाना जैसी आक्रामक वनस्पतियों को हटाया गया है। आगामी वर्ष 2026-27 के दौरान इस प्रोजेक्ट अंतर्गत लगभग 4,890 हेक्टेयर क्षेत्र में वृक्षारोपण तथा संरक्षण का कामकाज किया जाएगा ।

सोना वायदा में 393 रुपये और चांदी वायदा में 3700 रुपये का ऊछालः क्रूड ऑयल वायदा 32 रुपये बढ़ा

- कमोडिटी वायदाओं में 44533.43 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 278919.16 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवरः सोना-चांदी के वायदाओं में 32992.85 करोड़ रुपये का हुआ कारोबारः बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 34673 पॉइंट के स्तर पर

(जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 323471.04 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 44533.43 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 278919.16 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का दिसंबर वायदा 34673 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 2518.01 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 32992.85 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 138166 रुपये के भाव पर खूलकर, 138676 रुपये के दिन के उच्च और 138085 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 137885 रुपये के पिछले बंद के सामने 393 रुपये या 0.29 फीसदी की मजबूती के साथ 138278 रुपये प्रति 10 ग्राम बोला गया। गोल्ड-गिनी दिसंबर वायदा 497 रुपये या 0.45 फीसदी बढ़कर 110483 रुपये प्रति 8 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। गोल्ड-पेटल दिसंबर वायदा 47 रुपये या 0.34 फीसदी बढ़कर 13810 रुपये प्रति 1 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। सोना-मिनी जनवरी वायदा 136309 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 136500 रुपये और नीचे में 136000 रुपये पर पहुंचकर, 449 रुपये या 0.33 फीसदी बढ़कर 136248 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। गोल्ड-टेन दिसंबर वायदा प्रति 10 ग्राम 136671 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 136893 रुपये और नीचे में 136266 रुपये पर पहुंचकर, 136076 रुपये के पिछले बंद के सामने 576 रुपये या 0.42 फीसदी बढ़कर 136652 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर ट्रेड हो रहा था। चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा 221000 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 224300 रुपये और नीचे में 221000 रुपये पर पहुंचकर, 219653 रुपये के पिछले बंद के सामने 3700 रुपये या 1.68 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 223353 रुपये प्रति किलो पर आ गया। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा 3724 रुपये या 1.69 फीसदी बढ़कर 223927 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा 3675 रुपये या 1.67 फीसदी की बढ़त के साथ 223883 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था।

मेटल वर्ग में 7181.23 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा दिसंबर वायदा 22.35 रुपये या 1.96 फीसदी की तेजी के संग 1162.2 रुपये प्रति किलो हुआ। जबकि जस्ता दिसंबर वायदा 1.4 रुपये या 0.46 फीसदी की मजबूती के साथ 306.15 रुपये प्रति किलो बोला गया। इसके सामने एल्यूमीनियम दिसंबर वायदा 2.1 रुपये या 0.74 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 286.5 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा दिसंबर वायदा 10 पैसे या 0.05 फीसदी चढ़कर 181.95 रुपये प्रति किलो हुआ।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 4222.37 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल जनवरी वायदा सत्र के आरंभ में 5258 रुपये के भाव पर खूलकर, 5303 रुपये के दिन के उच्च और 5253 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 32 रुपये या 0.61 फीसदी की तेजी के संग 5286 रुपये प्रति बैरल हुआ। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी जनवरी वायदा 34 रुपये या 0.65 फीसदी की तेजी के संग 5287 रुपये प्रति बैरल के भाव पर पहुंचा।

इनके अलावा नैचुरल गैस दिसंबर वायदा सत्र के आरंभ में 396 रुपये के भाव पर खूलकर, 408.1 रुपये के दिन के उच्च और 390.4 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 380.8 रुपये के पिछले बंद के सामने 13.7 रुपये या 3.6 फीसदी की मजबूती के साथ 394.5 रुपये प्रति एमएमबीटीयू बोला गया। जबकि नैचुरल गैस-मिनी दिसंबर वायदा 14.6 रुपये या 3.85 फीसदी की मजबूती के साथ 394.3 रुपये प्रति एमएमबीटीयू बोला गया।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल दिसंबर वायदा 939 रुपये पर खूलकर, 60 पैसे या 0.06 फीसदी बढ़कर 941.6 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 13583.44 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 19409.41 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 6114.05 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 237.18 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 17.52 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 812.48 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 361.38 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 3849.06 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 17352 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 82222 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 22700 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 350693 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 37357 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 17300 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 43975 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 108403 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 20588 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 38895 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स दिसंबर वायदा सत्र के आरंभ में 34702 पॉइंट पर खूलकर, 34775 के उच्च और 34603 के नीचले स्तर को छूकर, 225 पॉइंट बढ़कर 34673 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल जनवरी 5300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 9.2 रुपये की बढ़त के साथ 149.9 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस जनवरी 400 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 3.75 रुपये की बढ़त के साथ 16.45 रुपये हुआ।

सोना दिसंबर 139000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 42 रुपये की बढ़त के साथ 1218 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी दिसंबर 229000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 116 रुपये की बढ़त के साथ 174.5 रुपये हुआ। तांबा जनवरी 1170 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 15.95 रुपये की बढ़त के साथ 42 रुपये हुआ। जस्ता जनवरी 320 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 1.69 रुपये की बढ़त के साथ 4.6 रुपये हुआ।

पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल जनवरी 5300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 24.3 रुपये की गिरावट के साथ 168.9 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस जनवरी 350 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 2.65 रुपये की गिरावट के साथ 32.65 रुपये हुआ।

सोना दिसंबर 138000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 252.5 रुपये की गिरावट के साथ 1450 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी दिसंबर 220000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 2162.5 रुपये की गिरावट के साथ 408 रुपये हुआ। जस्ता जनवरी 300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो बिना बदलाव के 4.58 रुपये हुआ।